पाठ 23

युग की आशा

● **संकलित**

आइए, सीखें : कविता में आए विविध चरित्रों के माध्यम से देशभक्ति, वीरता व अतीत गौरव के भाव जाग्रत करना।

॥ 1 ॥

युग की आशा हो,
कुमार !
तुम युग की आशा हो। ।

॥ 2 ॥

रूप तुम्हारा दिव्य चिरन्तन,
सबने तुमको प्यार किया,
तुम भावी के कलाकार हो,
तुमने जग साकार किया ॥

॥ 3 ॥

तुम्हें यशोदा के पलने की,
मुधर थपकियाँ जगा रहीं,
तुम्हें नंद की सकल सुरभियाँ,
वृन्दावन में बुला रहीं ॥

॥ 4 ॥

कौशल्या के मातृमोह के,
बने तुम्ही उच्चारण थे,
तुम वियोगिनी शकुन्तला के,
शीतलता के कारण थे।

शिक्षण संकेत –

♦ कविता की पंक्तियों को उचित हाव–भाव, लय के साथ पढ़िए। ♦ बच्चों को कविता याद करके सुनाने हेतु कहें। ♦ युवा पीढ़ी को उद्‌बोधन देने वाली अन्य कविता सुनाएँ। ♦ पाठ में आए विशिष्ट व्यक्तियों एवं चरित्रों के बारे में जानकारी दें।

॥ 5 ॥

गुरु द्रोण की प्रतिमा पूजक,
चक्रव्यूह के विध्वंसक,
तुम प्रताप के 'अमर' तेज,
हो पन्ना के इतिहास प्रशंसक ॥

॥ 6 ॥

तुम बैजू तुम तानसेन हो,
वाल्मीकि तुम तुलसी, सूर
तुम सृष्टि के आदि–रत्न हो,
नहीं क्षितिज से हो तुम दूर ॥

॥ 7 ॥

विप्लव के हो क्रान्ति गीत,
तुम आशाओं की आशा हो,
जीवन की चिर–शान्ति तुम्हीं हो,
यौवन की परिभाषा हो ।

॥ 8 ॥

युग की आशा हो,
! कुमार !
तुम युग की आशा हो ।

नए शब्द

दिव्य = अति सुन्दर, अलौकिक । **चिरन्तन** = लंबे समय से चला आने वाला। **भावी** = भविष्य के **विप्लव** = उपद्रव, उथल-पुथल । **क्रान्ति** = बदलाव, उलट फेर । **चिर-शान्ति** = दीर्घ कालीन सुख शान्ति । **सुरभियाँ** = गायें। **मातृमोह** = माता का मोह । **वियोगिनी** = विरह से दुखी। **प्रतिमा** = मूर्ति । **विध्वंसक** = विनाश (नष्ट) करने वाला। **प्रशंसक** – प्रशंसा (तारीफ) करने वाला। **आदिरत्न** = आदि पुरुष, प्रथम पुरुष । **क्षितिज** = जिस स्थान पर आकाश और पृथ्वी मिलते हुए दिखते हैं।

अनुभव विस्तार

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न-**

(क) सही जोड़ी बनाइए -

कौशल्या के मातृमोह के	–	सुरभियाँ
शकुंतला की शीतलता के	–	थपकियाँ
यशोदा के पलने की	–	उच्चारण
नंद की सकल	–	कारण

(ख) सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

(अ) तुम्हें नंद की सकल सुरभियाँ .....में बुला रहीं। (मथुरा, वृन्दावन)

(ब) गुरु द्रोण की प्रतिमा पूजक .....के विध्वंसक। (चक्रव्यूह, लक्ष्यभेद)

(स) तुम बैजू तुम तानसेन हो, वाल्मीकि तुम.....,सूर। (तुलसी, कबीर,)

(द) जीवन की .....शांति तुम्ही हो, यौवन की परिभाषा हो। (विचित्र, चिर,)

2. **अति लघु उत्तरीय प्रश्न-**

(अ) कवि ने 'कुमार' संबोधन किसके लिए किया है?

(ब) 'कौशल्या के मातृमोह के बने तुम्ही उच्चारण' से क्या तात्पर्य है?

(स) गुरु द्रोण की प्रतिमा की पूजा कौन करता था?

(द) 'चक्रव्यूह के विध्वंसक' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

(ई) बालक को 'भविष्य का कलाकार' किस पक्ति में कहा गया है?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न-

(अ) युग की आशा कहकर कवि ने किन-किन आदर्शों की चर्चा की है?

(ब) राष्ट्र के बच्चों को साहसी बनाने के लिए किन पंक्तियों में प्रेरित किया गया है?

(स) क्रान्ति गीत में कवि किस भाव को व्यक्त करना चाहता है?

(द) निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए-

अ. रुप तुम्हारा दिव्य चिरन्तन
सबने तुमको प्यार किया।

ब. तुम्हे नंद की सकल सुरभियाँ
वृन्दावन में बुला रहीं।

(ई) कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

भाषा की बात-

1 बोलिए ओर लिखिए-

चिरन्तन, थपकियाँ, मातृमोह, विध्वंसक, वाल्मीकि, क्षितिज, चिरशान्ति, विप्लव

2 सही वर्तनी वाले शब्दों को कोष्ठक में लिखिए-

1. दीव्य, दिव्य, दिवय ( )
2. वृन्दावन, व्रन्दावन, वृनदावन ( )
3. विधंवसक, विध्वंसक, वीध्वसंक ( )
4. कृान्ती, क्रान्ति, कृान्ति ( )

3. विलोम शब्दों की सही जोड़ी बनाइए-

(अ)	(आ)
सबल	अशान्ति
डरपोक	निर्बल
सूर्योदय	शोक
सार्थक	बहादुर
शान्ति	सूर्यास्त
हर्ष	निरर्थक

4. उदाहरण के अनुसार दिए गए शब्दों में आवट, आहट प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए–

मूल (क्रिया/शब्द)	**प्रत्यय**	**नया शब्द**
लिख (ना)	आवट	लिखावट
थक (ना)	.....	.....
दिख (ना)	.....	.....
सजा (ना)	.....	.....
घबरा (ना)	.....	.....
चिल्ला (ना)	.....	.....
तिलमिला (ना)	.....	.....

अब करने की बारी

1. कविता में आए कवियों की रचनाओं का संकलन कर कक्षा या बालसभा में सुनाइए।
2. 'युग की आशा' जैसी अन्य प्रेरित करने वाली कविताओं का संग्रह कीजिए और उन्हें कण्ठस्थ कीजिए।
3. कविता को समवेत स्वर में प्रार्थना सभा में सुनाइए ।